बुनकरों की दुनिया
पांच कहानियां और प्रार्थना

cudjk dh nfu;k

ikp dgkfu;k vkj izkFkuk

cudjk dh nfu;k

पांच कहानियां और प्रार्थना

तेलुगु, हिन्दी और अंग्रेजी में वर्ष 2018 में प्रकाशित

संयुक्त प्रकाशक :

cfu;u Vh
rdyh dk bEihV

1—बी, धेनु मार्केट, पहली मंज़िल,
इन्दौर — 452003 (इण्डिया)
फोन : 91—731—2531488,
मोबाईल : 91—9425904428 / 91—8989461462
ई—मेल : banyantreebookstore@gmail.com
वेबसाईट : www.banyantreebookstore.weebly.com

mtjEek

122, मार्ग 14, बंजारा हिल्स,
हैदराबाद 500034, तेलांगना, इण्डिया
ई—मेल : uzramma@gmail.com

सभी कहानियों और प्रार्थना का तेलुगु अनुवाद नारायण शर्मा
सिवाय हम्बीलमाय का करघा ए. सुनीथा

सभी कहानियों और प्रार्थना का हिन्दी अनुवाद अभय कुमार नेमा
सिवाय हम्बीलमाय का करघा वीणा शिवपुरी

चित्रांकन : राहक

लेआउट और पुस्तक डिजाईन : शुभम पाटिल

मुद्रण : भारती प्रिन्टर्स, इन्दौर

vuØef.kdk

gkih & vejhdh tutkfr; çkFkuk

हमारे लिए शुभ्र–धवल वस्त्र बुनो

भोर की सफेद रोशनी से लिपटे हुए

उनमें बुनी हो सिंदूरी शाम

फुंदने पड़े हो गिरती बारिश की बूंदो के

हो किनार इंद्रधनुष से बनी

इस तरह हमारे लिए शुभ्र–धवल वस्त्र बुनो

जिसे पहन कर हम गाती चिड़ियाओं के बीच घूमे फिरें

जिसे पहन चल सकें हरी घास पर

ओ मेरी धरती मां, ओ मेरे पिता आकाश

हमारे लिए शुभ्र–धवल वस्त्र बुनो

gEcªhyek; dk dj?kk

एक दिन शीपुंग नाम का एक साही नदी किनारे गहरी नींद में सोया हुआ था। तभी उसने सुना। ...

टक टक सुम, टक टक सुम!

यह कैसी आवाज है, उसने सोचा। उसने अपनी आँखे खोली और एक पत्थर के पीछे से झाँका। वह मिश्मी पहाड़ियों के बीच बहाने वाली बड़ी और सुन्दर कम्बलंग नदी के किनारे पर था।

उसने चारों ओर देखा।

टक टक सुम... सुम...

''अरे वाह!'' शीपुंग ने एक लड़की को खूबसूरत कपड़ा बुनते हुए देखा।

वह सबसे पहली बुनकर थी और उसका नाम था हम्ब्रीलमाय। देवी मताय ने उसे कपड़ा बुनना सिखाया था।

हम्ब्रीलमाय आकाश की ओर देख रही थी।

शीपुंग ने भी ऊपर आकाश की ओर देखा। उसने देखे सफेद बादल, बांस और फर्न की पत्तियां, और पेड़ों की टहनियों पर चमकते फूल। हम्ब्रीलमाय उन्हीं के नमूनों को अपने कपड़े पर उतार रही थी।

फिर उसने नदी की ओर देखा और पानी की बड़ी – छोटी लहरों की नकल की।

उसका करघा और काठ की पत्ती मिलकर आवाज निकल रहे थे –

टक... टक... सुम...

कपड़ा बहुत खूबसूरत था!

उसे देखने के लिए हरे बांस झुके जा रहे थे। पेड़ों पर चिड़ियाँ जोर–जोर से गा रही थीं।

''अहा! देखो, देखो सुन्दर कपड़े को।''

नदी में मछलियां छपाक–छपाक, ऊपर उछाल रही थीं उसे देखने के लिए।

''मुझे अपना कपड़ा दे दो!'' शीपुंग चिल्लाया। लेकिन हम्ब्रीलमाय कपड़ा बनाने में व्यस्त थी और उसने उसकी आवाज नहीं सुनी।

शीपुंग उठ खड़ा हुआ। वह एक छोटा–सा, भूरे रंग का, नुकीले सिर और छोटी–छोटी आँखों वाला जीव था। वह छोटा और चतुर था। उसके शरीर पर लम्बे–लम्बे

काँटों की एक परत थी, जो किसी बड़े से बड़े जानवर को भी डरा सकती थी।

सर्र्र्र्र्र्र्र्र्र्र... सर्र्र्र्र्र्र्र्र्र्र्र्र्र्र्र्र...

उसके शरीर से काँटे तीरों की तरह, तेजी से निकल आए।

हम्ब्रीलमाय ने अब भी उसे नहीं देखा।

एक... दो... तीन... शीपुंग संभल–संभल कर पत्थरो के ऊपर से रेंगता हुआ एक गुफा के पास पहुँचा, जहाँ

हम्ब्रीलमाय बैठी थी। अगर यह यहीं रहती है तो अंदर जरूर और भी सुन्दर कपडे होंगे, उसने सोचा।

लेकिन एक बड़ी चट्टान ने गुफा का रास्ता बंद कर रखा था।

शीपुंग ने अपने शरीर को सिकोड़ कर एक सख्त गेंद–सा बना लिया और जोर लगाकर अंदर घुसने की कोशिश करने लगा।

हुँह! हुँह! हुँह! उसने बार–बार जोर लगाया और धक्का दिया ...

... और फिर अचानक चट्टान लुढ़कने लगी।

टक! टक! टक!

छपाक!

शीपुंग नदी की तरफ दौड़ा और उसने देखा की चट्टान तो अपने साथ उस बुनकर लड़की, हम्ब्रीलमाय और उसके करघे को भी धकेल कर पानी में ले गई थी।

''वापस आ जाओ! वापस आ जाओ!'' शीपुंग पत्थरो पर ऊपर–निचे उछलता हुआ चिल्लाया।

लेकिन, किसी ने उसे जवाब नहीं दिया। सभी मछलियों ने फिर से नदी की गहराई में गोता लगा दिया। चिड़ियों ने गाना बंद कर दिया। हर तरफ सन्नाटा था।

शीपुंग को डर लगने लगा और अकेलापन भी।

"हाय! अब तो हम्ब्रीलमाय और उसका कपड़ा दोनों ही हमेशा के लिए चले गए," उसने दुखी होते हुए सोचा।

उसने नदी की ओर देखा और वह पलट कर जाने ही वाला था की तभी उसे दिखाई दीं – चारों ओर उड़ती हुई सुन्दर चमकती हुई तितलियाँ जो उसके सिर के ऊपर नाच रही थीं।

शीपुंग ने ऊपर देखा तो उनके पंखों पर दिखाई दिए हम्ब्रीलमाय के कपडे के चमकदार रंग और उठती–गिरती लहरों के नमूने।

उसके खूबसूरत नमूने तितलियों में बदल गए थे!

बड़ी दूर से उसे हल्की–सी थाप की आवाज सुनाई दी –

टक टक सुम सुम... टक सुम सुम...

हम्ब्रीलमाय का करघा टूट कर टुकड़े–टुकड़े हो गया था और उसका कपड़ा भी नदी में बह गया था, पहाड़ों से मैदानों की और जहाँ वह, लोगों को मिला और उन्होंने कपड़ा बुनना सीखा।

उसके करघे की नुकीली पत्ती ने बर्फी जैसी आकृति का रूप ले लिया।

और इसलिए मिश्मी लोग कहते हैं की उन कपड़ों की बुनावट में इतने तिरछे चौखाने होते हैं।
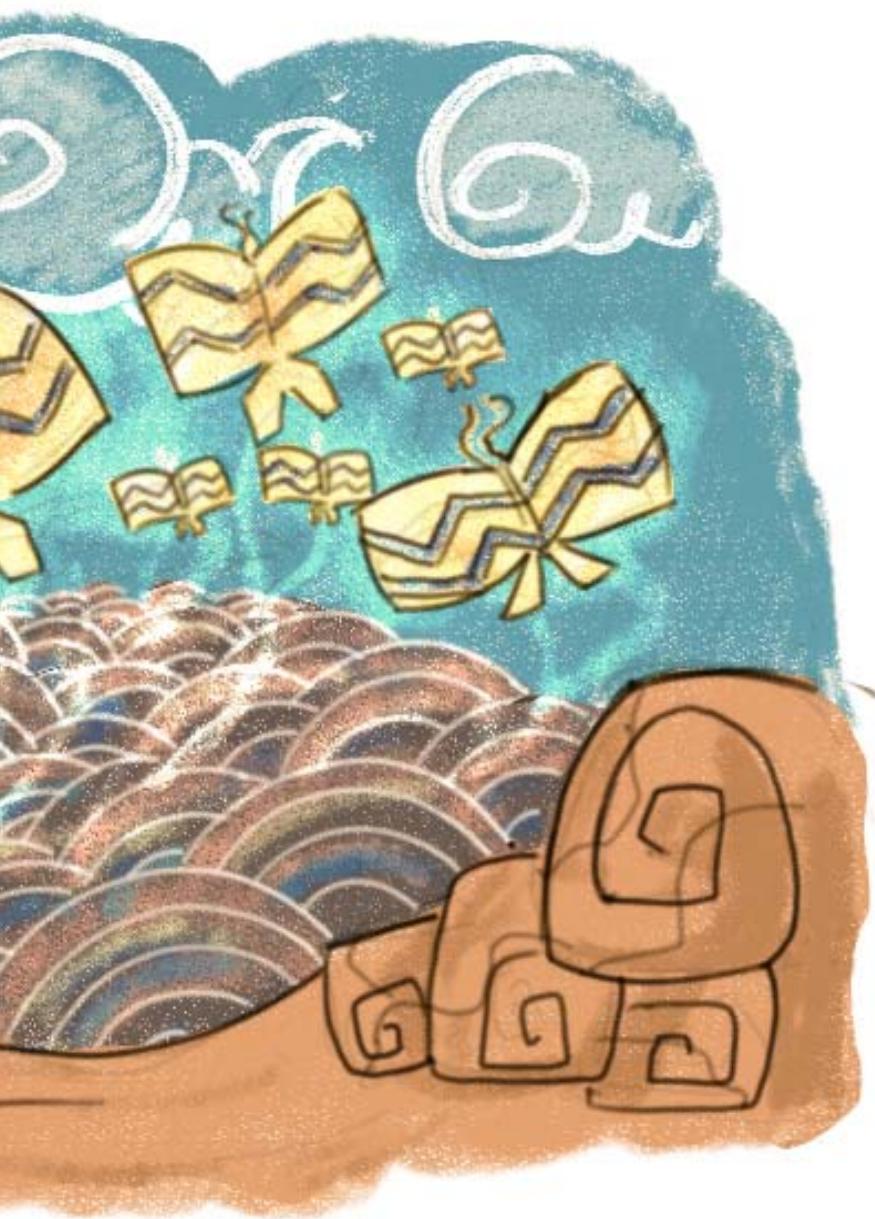
tkn|bl dj?kk

दूर–दराज के एक देश में एक बूढ़ा जुलाहा रहता था। वह कपड़े बुनता था। यह माना जाता था कि उस जुलाहे के हाथ से बुने कपड़े में बरकत थी। जो स्त्री और पुरुष उसके बनाए कपड़े पहनते थे वे स्वस्थ, समृद्ध और बुद्धिमान हो जाते थे। लेकिन बूढ़ा जुलाहा खुद के बुने हुए कपड़े किसी को बेचता नहीं था, वह खुद उन लोगों को चुनता था जिन्हें वह कपड़े दे सके। इसके अलावा वह किसी और को कपड़े नहीं देता था।

किसी को यह नहीं मालूम कि वह कपड़ा बुनने के लिए धागा कहां से लाता था।

यह भी नहीं पता कि उसके पास वह जादुई करघा कैसे आया जिससे जादुई कपड़े बुने जाते थे।

यह करघा जुलाहे के पास कैसे आया और किसी ओर के पास ऐसा करघा क्यों नहीं है? यह सवाल भी रहस्य ही थे।

लोग बड़ी दूर–दूर से उस जुलाहे के पास कपड़े लेने आते थे लेकिन उस जुलाहे को ढूंढना बड़ा मुश्किल

रहता। किसी नक्शे में उसका जिक्र नहीं था। उसके पास हवाई रास्तों, जलमार्ग या सड़क से होकर पहुंचना तक मुश्किल था।

उसको ढूंढते–ढूंढते कई लोग थक जाते और बीमार होकर उसे ढूंढना बंद कर देते थे। लेकिन इरादों के पक्के कुछ लोग उस तक पहुंच ही जाते थे। हद तो यह थी कि जैसे–तैसे जुलाहे तक पहुंच भी गए तो यह निश्चित नहीं रहता था कि जुलाहा उन्हें कपड़ा देने का सुपात्र मानेगा ही।

इस जादुई करघे और इस पर कपड़ा बुनने वाले जुलाहे का राज किसी को नहीं मालूम। पर वह राज मैं आपके सामने खोल रहा हूं।

जब यह दुनिया नई ही बनी थी तो इसमें भांति–भांति के प्राणी रहा करते थे। इनमें आज के समान मनुष्य, जानवर और वनस्पतियां थीं। इसके अलावा उस दुनिया में ऐसे प्राणी भी रहते थे जो दूसरी दुनिया से आए थे और उन्होंने इस पृथ्वीलोक के मनुष्य की शक्ल अख्तियार कर ली थी। ये प्राणी साधारण मनुष्यों जैसे दिखते थे लेकिन इनके पास कुछ विशेष शक्तियां और नेमत थीं जो इस दुनिया के प्राणियों के पास नहीं थीं। वे खुद को विभिन्न प्राणियों की शक्ल और आकार में बदल सकते थे, इसके अलावा वे कई और काम कर सकते थे जिसके बारे में मनुष्य सोच भी नहीं सकते थे।
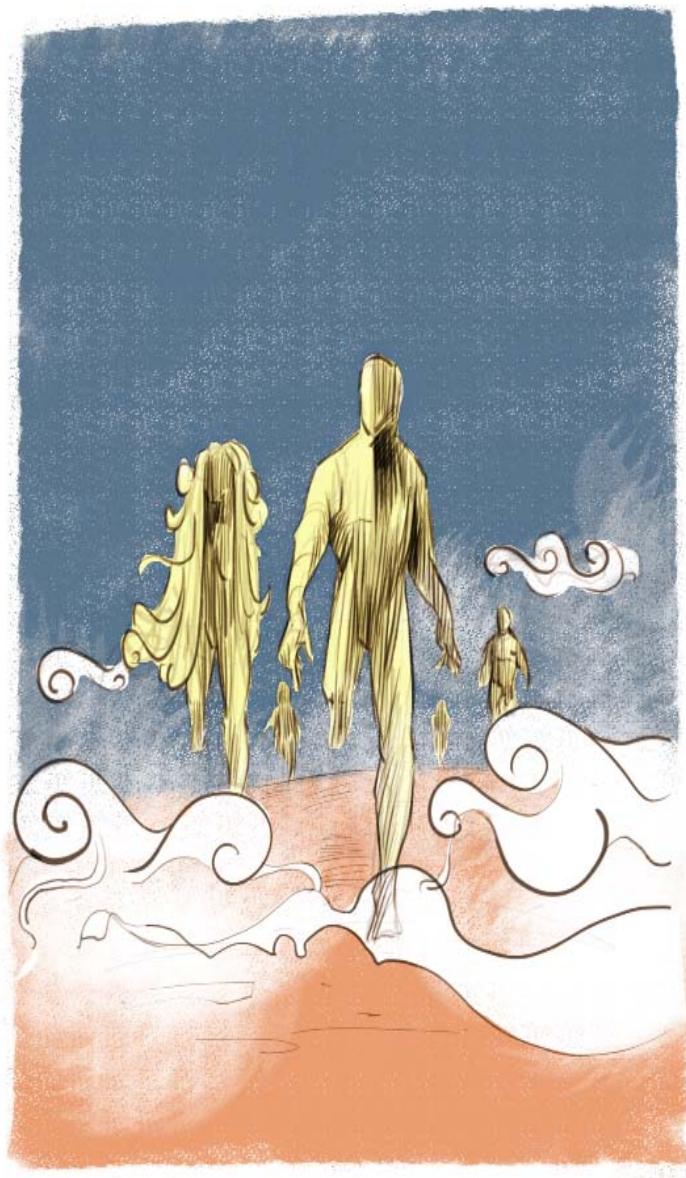
यह प्राणी अन्य जीवों और 'साधारण मनुष्यों' से अलग था, हालांकि 'साधारण मनुष्य' जैसा कोई जीव नहीं होता और हर मनुष्य अपने आप में अद्वितीय होता है। इस प्राणी और मनुष्यों में सबसे बड़ा अंतर यही था कि यह इस तरह से बना था कि कभी भी बुरा नहीं देख सकता था, न ही किसी का बुरा सोच सकता था और न ही बुरा महसूस कर सकता था। यह एक तरह से 'पवित्र आत्मा' थे। इन प्राणियों को दुनियावी चीजों से कोई मोह नहीं था, लेकिन वे खुद के इस तरह से होने को एक बाधा मानते थे और वे खुद को अच्छा माने जाने के प्रभाव के बजाए या दूसरों की पसंद से अच्छा होने की बजाए अपनी इच्छा से अच्छे बने रहना चाहते थे। इसलिए वे उन मनुष्यों का बड़ा आदर करते थे जिनमें अच्छाई और बुराई में फर्क करने की क्षमता हो। चाहे बात छोटी हो या बड़ी लेकिन वे उन मनुष्यों को पसंद करते थे जिनमें अच्छाई या बुराई का फर्क करने की क्षमता थी।

जब उन्हें ऐसा कोई मनुष्य दिखाई देता था तो वे उनके करीब पहुंचने की कोशिश करते और जब ये ऐसे मनुष्य के पास पहुंच जाते तो वे धीरे धीरे चमकना शुरू कर देते और सोलर ऊर्जा से चलने वाले बल्ब की तरह प्रदीप्त होने वाला प्रकाश पुंज बन जाते। लेकिन जब ये उस मनुष्य को बुराई चुनने वाले के रूप में देखते तो वह मंद और काले पड़ने लगते और धीरे धीरे वे

मोमबत्ती की बुझती लौ की तरह फड़फड़ाते और बेजान पड़ने लगते।

लेकिन इस दुनिया में अच्छाई चुनने वाले मनुष्यों के साथ कुछ मनुष्य ऐसे भी थे जो अच्छाई के बजाए बुराई को चुनते थे, इसके चलते यह दुनिया कम रोशनी के कारण मद्धिम और अंधियारी होने लगी। यह दुनिया उस दुनिया से धुंधली थी जो कि नई–नई बनी थी। इन्हीं में से एक प्राणी था जो न तो पुरुष था न ही स्त्री। इसका नाम मित्या था।

मित्या इन असाधारण लोगों में भी असाधारण था। यह नहीं मालूम कि वह हमारी दुनिया में पहले आने वाले प्राणियों के साथ कैसे, कहां से आया? उसने कई युग इस पृथ्वी पर घूमकर बिताए, वह आकाश में भी घूमा और समुद्रों और नदियों में भी घूमता रहा। मित्या इस लिहाज से असाधारण नहीं था कि वह पृथ्वी पर यहां से वहां घूमता रहा, वह इस मायने से भी असाधारण नहीं था कि उसने इस तरह के प्राणियों के समान तरह–तरह के रूप धरे। मित्या की मनुष्य प्रजाति और उसका अनुगमन करने वाले प्राणियों में दिलचस्पी थी जो उसे अलग बनाती थी। वह लगातार मनुष्य प्रजाति के बारे में सोचती व उसकी चिंता करती और आश्चर्यचकित होती रहती। वह खुद अपने आप से पूछती कि आखिर क्यों अधिकतर मनुष्य अच्छाई के बजाए बुराई को चुनते हैं?

मित्या में असीमित ऊर्जा थी वह सदियों तक जिंदा रही। उसके पास दस हजार साल तक के विचार, कौतुक और चिंताएं थी जिन पर उसने दसियों हजार बार सोचा था। मित्या ने तय किया कि वह अपने लोगों को बुराई पसंद करते हुए देखती नहीं रहेगी। अन्य जगत के प्राणी मनुष्यों को बुराई पर अच्छाई पसंद

करने में मदद करना चाहते थे। मित्या उन तरीकों के बारे में सोचने लगी कि किस तरह ऐसा किया जा सकता है।

यदि मैं आपको यह बताना शुरू करूं कि इसके लिए मित्या ने क्या–क्या किया तो यह कहानी कभी खत्म नहीं होगी।... मित्या ने जादुई भोजन बनाना शुरू किया जिसे खाकर मनुष्य अच्छाई के पक्ष में रहे लेकिन मनुष्यों ने उस भोजन में कुछ न कुछ खामी निकालनी शुरू कर दी। किसी को लगता इसमें नमक ज्यादा है तो कोई कहता कि इसमें नमक कम है। कोई कहता यह चबाते नहीं बनता, कोई कहता बड़ा नरम है। तो मित्या ने जादुई भोजन बनाने का इरादा छोड़ दिया। फिर मित्या ने ऐसी कहानियों वाली किताबें रच दीं जिन्हें पढ़कर मनुष्य बुराई पर अच्छाई को तरजीह दे। लेकिन उन किताबों को किसी ने नहीं पढ़ा और वे अलमारियों में धूल खाती रहीं। लाइब्रेरियों में उन पर मकड़ियों ने जाले बना लिए, 500 साल बाद उन किताबों को दीमक चाट गए।

मित्या ने जादुई पानी, जादुई बादल, जादुई जूते भी बनाए लेकिन ये काम नहीं आए...।

एक दिन भीड़भाड़ वाली सड़क पर मित्या ने एक जवान आदमी को देखा। वह ऐसा विरला था जो उसे अच्छा लग रहा था। मित्या को उसके चलने का अंदाज बड़ा ही विचित्र लगा। वह सामान्य मनुष्य की तरह नहीं चल

रहा था उसकी गति भी अन्य लोगों से अलग थी। उसकी चाल कुछ ऐसी थी मानो उसे चलने की आदत न हो, वह हमेशा बैठा ही रहता हो। मित्या उसके पास गई तो वह खुद प्रदीप्त होने लगी।

मित्या उससे बोली – ''कैसे हो''

जवान आदमी बोला – सुप्रभात। वह खुशी–खुशी बोला – ''मैं आपके लिए क्या कर सकता हूं।''

मित्या ने उससे पूछा ''आप क्या करते हो।''

इस नौजवान का नाम जमाल था, उसने कहा ''मैं कपड़े बुनता हूं।''

उसने मित्या को बताया कि वह अपने करघे पर कई–कई घंटों तक बैठा रहता है जिसके कारण वह लचक–लचक कर चलता है। उसने बताया ''वह करघे पर कपड़े बुनता है, जिन्हें बेच कर वह अपने परिवार के वृद्धों और बच्चों के लिए भोजन जुटाता है।''

जमाल ने कहा ''उसका सपना है कि वह लोगों को कपड़े दे सके न कि बेचे, क्योंकि कपड़ा देकर उसे खुशी होगी। कपड़ा बेच कर पैसा लेने में उसे दुख होता है।''

मित्या ने जब यह सुना तो वह और प्रदीप्त होने लगी।

इसके बाद मैं आपको कुछ नहीं बताऊंगा। आप कल्पना कर सकते हो। मित्या ने जमाल के लिए एक जादुई
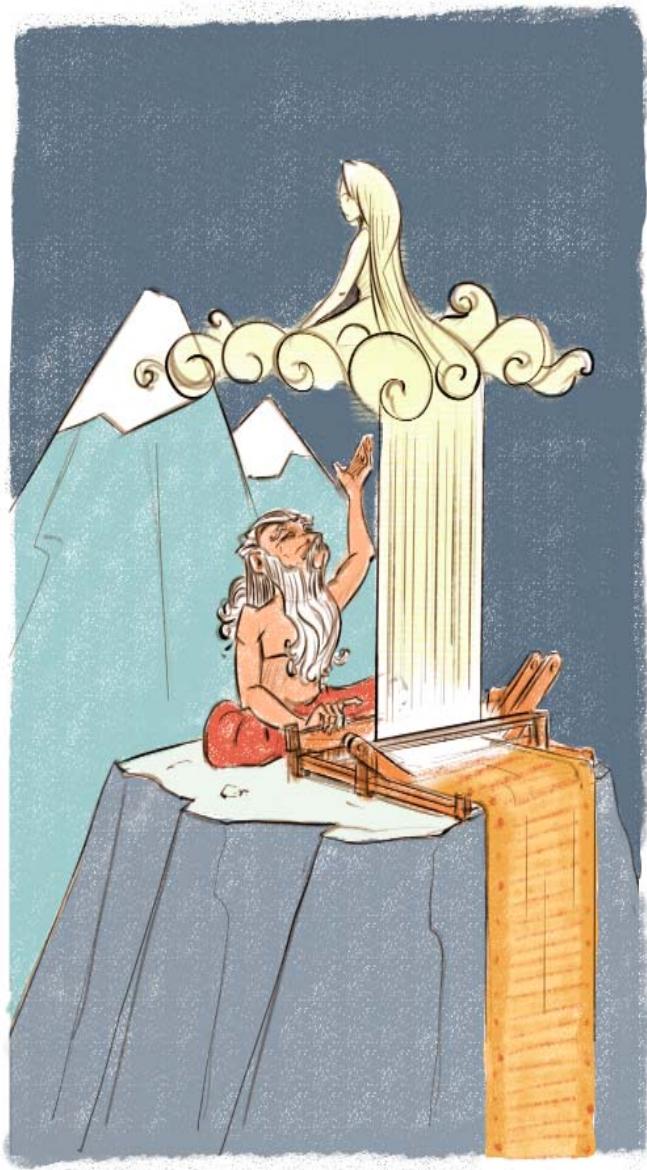
करघा बनाने का निश्चय किया। इसके लिए उसने जादुई धागा भी बनाया जिससे जमाल को कपड़ा बुनने के लिए कपड़ा मिलता रहे। इस तरह जमाल को कपड़ा बुनकर बेचना न पड़े। वह लोगों के देने के लिए जितना चाहे कपड़ा बुने और अपनी मर्जी से लोगों को दे सके। लोग इसके बदले में उसकी भोजन की जरूरतें पूरी करते रहें।

मित्या ने कहा कि वह करघा इस शर्त पर बनाएगी कि जमाल किसी को यह नहीं बताएगा कि उसके पास जादुई करघा कहां से आया। इसलिए यह कहानी जो मैने आज आपको सुनाई इससे पहले किसी ने नहीं सुनी थी।

सिंहासन पर खतरा

बनारस को पंडों, सांडों और जरी का काम करने वाले शहर के रूप में जाना जाता है। यहां के पंडे कर्मकांड के लिए कुख्यात हैं। सांड जहां–तहां गलियों में खड़े मिल जाते हैं और जरी के काम वाली साड़ियां तो पूरी दुनिया में मशहूर हैं। जरी का काम करने वालों को बनारस के राजा ब्रह्मदत्त ने यहां बसाया था, अन्यथा उन्हें बनारस में जमीन खरीदने की इजाजत भी नहीं थी, क्योंकि ब्राह्मण उन्हें निम्न दर्जे का मानते हैं।

ब्राह्मण उन्हें बुद्धिहीन और विद्याहीन कहते। ब्राह्मण उन्हें शहर में इसलिए बसने नहीं देना चाहते कि कहीं वे शहर को अपनी मूर्खता से दूषित न कर दें। यही

सोचकर उन्हें शहर से दूर बसने दिया गया ताकि वे शहर के हृदय से दूर अपना जरी का काम कर सकें।

एक दिन राजा ब्रह्मदत्त अपने सिंहासन पर विराजे लोगों के दुखड़े सुन रहे थे। इस बीच प्रधानमंत्री उनके पास दौड़ता हुआ आया और उनके कान में फुसफुसाया – ''महाराज कोई विपत्ति आने वाली है! मंगोलों ने अपना दूत भेजा है।''

तो इसमें घबराने वाली बात क्या है? राजा ने कहा – ''जाओ उसे अंदर लाओ, हम उससे मिलने के लिए तैयार हैं। आखिर वह एक दूत ही तो है।''

प्रधानमंत्री बोला – ''यह मंगोलों का दूत है। यह अन्य दूतों से अलग है। यह अपना संदेश संकेतों के रूप में देना चाहता है। इसी के कारण मुझे बड़ी चिंता हो रही है।''

राजा ने कहा – ''यदि ऐसी बात है तो हम आज तो कुछ नहीं कह पाएंगे, उसे आज अपना संदेश देने दो हम उसका उत्तर कल उसे देंगे।'' राजा ने कहा – ''इस तरह के हालातों में हम यही कर सकते हैं, मुझे अपने ब्राह्मणों पर भरोसा है कि वे जरूर उसके संकेतों को समझ कर हमें बता सकेंगे कि वह क्या कह रहा है। वैसे भी दूत को ज्यादा इंतजार करवाना अच्छी बात नहीं है, उसे अंदर आने दिया जाए।''

राजा की बात सुनकर प्रधानमंत्री मंगोल दूत को लाने के लिए चला गया। दरबार में सभी की नजरें उस मंगोल दूत की झलक पाने के लिए बेताब थीं जो संकेतों में अपनी बात कहने वाला था।

तभी दूत ने प्रवेश किया और राजा के सामने कॉर्निश की। उसने कुछ नहीं कहा, बस एक लाल खड़िया का टुकड़ा लिया और फर्श पर राजा का सिंहासन बनाकर उसके चारों ओर एक बड़ा घेरा बना दिया। इसके बाद वह राजा की तरफ घुमा, झुका, सलाम किया और एक तरफ खड़ा हो गया।

दूत के दुभाषिए ने कहा – ''महाराज कल इसी वक्त तुम्हारे सवाल का जवाब देंगे।'' यह सुनकर दूत ने फिर झुक कर सलाम किया और चला गया।

राजा बुदबुदाया – ''यह अजीब पहेली है।''

दरबारियों ने सहमति में कहा – ''वाकई महाराज यह पहेली है।'' राजा दरबारियों के साथ अपनी ठोड़ी पर हाथ फेर कर यह सोच रहा था कि सिंहासन को घेर कर बनाए गए लाल घेरे का आखिर क्या मतलब है?...

इसके बाद राजा ब्रह्मदत्त ने अकेले में प्रधानमंत्री से पूछा कि मंगोल दूत के इस संकेत का क्या मतलब हो सकता है?

प्रधानमंत्री ने जवाब दिया – ''महाराज मुझे लगता है कि वह कहना चाहता है कि आपका सिंहासन पृथ्वी के बीचोंबीच है और यहां से आपकी कीर्ति दूर–दूर तक फैल रही है।''

इस पर राजा हँसा और बोला – ''क्या बेकार की बात कर रहे हो, मैं इतना भोला नहीं कि यह मान लूं कि दुर्जेय मंगोलों द्वारा कई पर्वत और मरुस्थलों को पार कर अपने दूत को महज यह संदेश देने के लिए यहां भेजा होगा।'' राजा बोला – ''हो सकता है यह युद्ध की घोषणा हो, खैर हमें क्या उत्तर देना चाहिए?''

यह सुनकर प्रधानमंत्री अपनी पगड़ी ठीक करने लगा, उसने अपनी ठोड़ी पर हाथ से रगड़–रगड़ कर विचार किया और कहा – ''इस बारे में क्या कहें वह नहीं जानता।'' उसने सभी जानकार ब्राह्मणों से इस बारे में सलाह ली और सारे ब्राह्मण भी इस पहेली के रहस्य को सुलझा नहीं सके। ब्राह्मणों ने कहा – ''इस पहेली से हमारा कोई सरोकार नहीं है, हम तो वेद–शास्त्रों का अर्थ बता सकते हैं, आप बनारस के सांडों से इसका अर्थ पूछ लो, हो सकता है वे इन संकेतों का अर्थ बता सकें।''

प्रधानमंत्री ने राजा से कहा कि मुझे चिंता हो रही है।

राजा ने मजाक में पूछा – ''क्या तुमने सांडों से इसका अर्थ पूछा?''

प्रधानमंत्री ने कहा – ''मैने पूछा था लेकिन सांडों ने कोई जवाब नहीं दिया!''

महाराज ने पूछा – ''क्या तुमने जरी का काम करने वालों से इसका अर्थ पूछा?''

प्रधानमंत्री बोला – ''महाराज वे तो उन ब्राह्मण के बैलों से भी ज्यादा मूर्ख हैं।''

राजा ने कहा – ''हो सकता है तुम सही कह रहे हो लेकिन तुम्हें उनसे भी सलाह लेनी चाहिए, क्योंकि हमें कल तक दूत को जवाब देना है। यदि हम ऐसा नहीं कर पाए तो तुम जानते ही हो इसका परिणाम...।'' महाराज ने अपना वाक्य अधूरा छोड़ दिया था।

प्रधानमंत्री ने सिर हिलाकर यह समझ लिया था कि यदि उसने कल तक सही जवाब नहीं खोजा तो उसे पद से हटा दिया जाएगा। वह जानता था कि राजा ब्रह्मदत्त का कहा पत्थर की लकीर है।

प्रधानमंत्री की पेशानी पर पसीना आ गया था, वह जल्द किसी जरी के कारीगर से दूत के संकेत का जवाब पाना चाहता था लेकिन शहर में उसे कोई कारीगर नहीं मिला। चूंकि जरी के कारीगरों को शहर में रहने की इजाजत नहीं थी इसलिए वे शहर और शहर से लगे इलाकों से भी दूर चले गए थे। प्रधानमंत्री ने सोचा–विचारा और चौकीदार को बुलाकर उससे कहा कि वह सारे बनारस में घूम–घूम कर इस पहेली का

अर्थ लोगों से पूछे। बनारस के पुरुष–महिलाएं और बच्चे भी मंगोल दूत की इस पहेली का जवाब नहीं दे सके, वे पहेली सुनते और एकटक देखते रहते। सिंहासन पर लाल खड़िया से बनाए गए घेरे की पहेली को कोई नहीं बूझ सका।

अब प्रधानमंत्री पर चिंता सवार हो चुकी थी, उसने घुटनों के बल बैठकर भगवान से प्रार्थना करना शुरू कर दिया, तभी चौकीदार आया और उसने कहा – ''हो सकता है एक आदमी इस बात का जवाब दे दे।

इतना सुनते ही प्रधानमंत्री उछल पड़ा – ''कहां है वह? उसे तुरंत लाओ।''

इस पर चौकीदार ने कहा – ''वह बड़ा ही विकट आदमी है, वही एकमात्र जरी का कारीगर है जो बनारस के उपनगर में रहता है। लेकिन वह शहर में आने से मना कर देगा, जब तक कि उसे स्वयं राजा न बुलवाएं।''

प्रधानमंत्री बुदबुदाया गुस्ताख कहीं का, फिर बोला – ''तुम्हें कैसे पता कि इस आदमी के पास दूत के सवाल का जवाब होगा? वह है तो आखिर मामूली बुनकर और बुनकर ढीले–ढाले ही होते हैं। मुझे लगता है कि वह न केवल मूर्ख है बल्कि खुद को कुछ ज्यादा ही समझता है। वह कुछ ज्यादा ही मूर्ख है।''

चौकीदार ने कहा – ''नहीं हुजूर, वह बड़ा ही होशियार है, जब मैं नदी पार उसके घर गया था तो मैने देखा उसका पालना खुद–ब–खुद झूल रहा था। मैं चकित रह गया, मैने सोचा कि इस व्यक्ति से मिलना चाहिए, जैसे ही मैं दरवाजा खोल कर भीतर घुसा तो अपने आप घंटी बजने लगी।''

प्रधानमंत्री ने पूछा – ''फिर क्या हुआ?''

चौकीदार बोला – ''मैं बैठक के कमरे से पिछले हिस्से में कारीगर के बागीचे में पहुंचा तो देखा कि वहां नदी किनारे भुट्टे उग रहे थे, वहां एक पेड़ था जिसकी बेंत जैसी डाली इस तरह सरसरा रही थी कि मक्का चुगने आए पंछी भाग रहे थे, जबकि हवा नहीं चल रही थी पेड़ की डाली खुद ही हिल रही थी, मैं चकित रह गया। मैने आसपास देखकर पुकारा यहां कोई है।''

किसी की आवाज आई – ''मैं यहां कारखाने में हूं।''

प्रधानमंत्री ने कहा – ''जल्दी बताओ आगे क्या हुआ, क्या तुमने उससे बात की, उसने क्या कहा?''

चौकीदार ने कहा – ''मैने उसे अपने करघे के पास बैठे देखा, वह धागे सही कर रहा था। वह कुछ नहीं कर रहा था उसने ऐसी यांत्रिक युक्ति तैयार की थी जो नदी की धारा के प्रवाह से चलती थी, इससे उसके बच्चे का झूला, झूलता रहता, झूले से उसके घर में घंटी बजती थी, उस घंटी से हवा से बेंत की डाली

हिलती और उसका करघा चलता। मैने उसे देखकर खुद से कहा मुझे इसी आदमी की तलाश थी।''

मैने उसे मंगोल दूत के सवाल के बारे में बताया कि सिंहासन को लाल खड़िया के घेरे के संकेत का क्या अर्थ हो सकता है।

प्रधानमंत्री ने आश्चर्यचकित होते हुए पूछा – ''क्या एक खिलौना बनाने वाला यह बता सकता है! आखिर उसने क्या जवाब दिया।''

कारीगर ने ठहाका लगाया और मेरी पीठ पर धौल जमाते हुए बोला – ''जाओ और राजा को लेकर आओ मैं जवाब दूंगा।''

मैने कहा – ''क्या राजा को ही जवाब दोगे और किसी को नहीं!'' इस पर उसका जवाब था – ''प्रधानमंत्री यह काम करेंगे, जल्दी करो।'' यह सुनकर मैं तुरंत यहां आ गया।

प्रधानमंत्री को यह भरोसा हो गया था कि दूत के सवाल का सही जवाब उस व्यक्ति से मिल जाएगा। प्रधानमंत्री ने कहा – ''वह निश्चित ही बुद्धिमान है, अब जल्द हमें उसके पास चलना चाहिए।''

कारीगर प्रधानमंत्री की कहानी सुनकर खूब हंसा, उसके बाद बोला – ''घबराने की जरूरत नहीं, अभी सुबह होने में देर है।''

प्रधानमंत्री ने कहा – ''भले आदमी तुम मेंरी परेशानी को समझ सके, जूते के भीतर मेंरे पैर कांप रहे हैं, मुझे अपनी चिंता नहीं है, यह बनारस की प्रतिष्ठा का सवाल है, सभी, मंगोल दूत की पहेली से चकराए हुए हैं! अब तुम जल्दी से उसका सही अर्थ बता दो, तुम जो चाहो तुम्हें मिल जाएगा, राजा ब्रह्मदत्त अपनी बात के पक्के हैं।''

कारीगर ने कहा – ''चिंता मत करो, सूर्योदय से पहले कल वापस आओ। जवाब तैयार रहेगा।''

अगली सुबह जब प्रधानमंत्री कारीगर के पास पहुंचे तो कारीगर ने एक झोले में एक जोड़ी पासे, वायलन का खिलौना, कुछ अखरोट और एक छोटा पिंजरा रख लिया जिसमें दो गौरैया थीं।

प्रधानमंत्री ने विस्मित होकर पूछा – ''यह सब क्या है।''

कारीगर बोला – ''यह मंगोल दूत के लिए है, इससे उसकी पहेली सुलझ जाएगी।''

दरबार में तुरही बज उठी, मंगोल दूत राजा ब्रह्मदत्त के सिंहासन कक्ष में प्रवेश कर चुका था। उसने राजा को झुक कर सलाम किया। वह राजा के सामने वाली कुर्सी पर बैठ गया, उसके साथी और दुभाषिए ने सिंहासन को लाल खड़िया से घेरे जाने के संकेत के उत्तर जानने के लिए इशारा किया।

''हमारे राजा की ओर से हमारे विश्वासपात्र मित्र और बनारस के उस्ताद कारीगर जवाब देंगे'' – प्रधानमंत्री ने कहा।

कारीगर अपनी जगह से खड़ा हुआ और उसने अपने दोनों पासे दूत के आजू–बाजू रख दिए। प्रधानमंत्री और दरबारी अपनी सांस रोके देख रहे थे कि क्या कारीगर दूत की अबूझ पहेली का उत्तर दे पाएगा या नहीं?

इस बीच मंगोल दूत ने उन पासों पर अवमानना के साथ नजर डाली और फिर उसने सिंहासन के चारों ओर चारकोल के टुकड़े से कुछ छोटा काला घेरा बना दिया और अपनी कुर्सी पर आकर बैठ गया। अब सभी की निगाहें कारीगर की ओर थीं कि वह अब क्या करेगा?

कारीगर ने अपने झोले में सारंगी निकाली और नृत्य करना शुरू कर दिया। मंगोल दूत ने जवाब में अनाज के दाने निकाल कर फर्श पर बिखेर दिए तो बुनकर ने तुरंत पिंजरे से पालतू गौरैया के जोड़े को निकाला और उन्होंने सारे दाने चुग लिए।

इसके बाद दूत ने युद्ध लड़ने में कंधे पर पहनने वाला लोहे का सुरक्षा कवच निकाला। बुनकर ने जरी का काम करने वाली दो सूइयों से उसे छेद दिया। दूत और उसका साथी उस सूई को उठाकर बड़े गौर से देखने लगे। इसके बाद दोनों ने एक दूसरे को झुक

कर सलाम किया। अब बुनकर ने एक अखरोट निकाला और दूत को दे दिया। दूत ने इसे अंगुलियों और अंगूठे से मूंगफली की तरह तोड़ दिया।

यह देख राजा और दरबारियों में हताशा छा गई, अखरोट खोखला था और ओस की बूंदों से भरा हुआ था। दरबारी बुनकर की ओर देखने लगे कि कहीं वह मंगोल दूत को परमशक्ति मान कर बनारस के राजा की प्रतिष्ठा को धूमिल करने तो नहीं जा रहा। बुनकर ने दूत और उसके साथी को मुस्कुरा कर देखा। उसने अपनी अंगुलियां घुमाई तो अखरोट से ओस की बूंद टपक गई और फर्श पर लुढ़क कर जरी के काम वाली रेशमी शॉल बन गई। यह शाल भी 10 गज चौड़ी और लंबी थी। यह देखकर दूत और उसके साथी का चेहरा पीला पड़ गया।

अब मंगोल दूत बड़ा ही हताश होकर अपने आसन से उठा और रुखसत के लिए विदा लेने लगा। अब उसके हाथ नमस्ते की मुद्रा में थे। बुनकर ने उसके हाथों में दो अखरोट डाल दिए। उसके साथी ने भी इसी मुद्रा में विदा ली। बुनकर ने उसे भी दो अखरोट दिए। इसके बाद उन्होंने बिना और कुछ बोले दरबार छोड़ दिया।

दरबार के समाप्त होने पर ब्रह्म दत्त ने बुनकर को अपने पास बुलाया और कहा – "तुमने मंगोल दूत की पहेली का अर्थ पकड़ा और उसे उचित जवाब दिया, अब तुम

अपने लिए कुछ भी मांग सकते है, लेकिन मुझे यह भी बताओ तुमने जो कुछ किया उसका क्या अर्थ था। दरबार में किसी को कुछ भी समझ नहीं आया।''

बुनकर बोला – महाराज इसका उत्तर बड़ा ही सरल है, दूत ने सिंहासन के चारों ओर लाल खड़िया से घेरा बनाकर पूछना चाहा था कि यदि मंगोल सेनाओं ने आपके राज्य को चारों तरफ से घेर लिया तो आप क्या करेंगे? इसका उत्तर चौरस खेलने वाले पासे डालकर दिया, यानी कि इस कदम को बच्चों के चौसर खेल जैसा मत समझो?

राजा ने पूछा – ''छोटे काले घेरे का क्या मतलब था।''

बुनकर ने कहा – मंगोल दूत पूछ रहा था कि यदि मंगोल सेनाएं आपके राज्य के नजदीक पहुंची और फसल और हमारी चौकियों को नष्ट करने लगीं तो आप क्या करेंगे? इसके जवाब में मैने उन्हें सारंगी की गज दिखाई। यानी कि हमें इसकी फिक्र नहीं। मंगोल दूत ने फर्श पर अनाज के दाने बिखेर दिए जिसका मतलब था कि मंगोल सेनाएं राज्य के बहुत नजदीक आकर घेर लेंगी तो इसका जवाब बुनकर ने यह दिया – ''हमारी छोटी सी सेना ही बहुत कम हथियारों से उन्हें चट कर जाएगी।''

मंगोल दूत ने जो सुरक्षा कवच दिखाया था उसका मतलब यही था कि हमारे सैनिक सुरक्षा कवच से लैस

होंगे, इसका जवाब यह दिया कि हमारे पास मजबूत इस्पात वाली सूईयां हैं जिनसे हम रक्षा कवच छेद देंगे।

अब राजा ने पूछा कि अखरोट का क्या अर्थ था, इस पर बुनकर ने कहा – ''अखरोट सूई की ताकत बताने के लिए दिया गया था।'' इसका अर्थ यह था कि इस देश के बुनकर इतने चतुर हैं कि वे 10 वर्ग गज की जरी की शॉल को ओस की बूंद जितना छोटा भी बना सकते हैं तो हम ऐसे हथियार भी बना सकते हैं जो रक्षा कवच को भेद जाएंगे। राजा ने पूछा कि बाद में जो तीन अखरोट और दिए उनका क्या अर्थ था, इसके जवाब में बुनकर ने कहा – ''तीन अखरोट बनारस की रेशम से भरे हुए थे और ये मंगोल शासक को भेंट थी। इन्हें देखकर वह हमारे जवाब पर भरोसा कर सकता था, क्योंकि वह मंगोल दूत की बात पर एकबारगी यकीन नहीं करता इसलिए मैने उसे सबूत भी दे दिए। उसे कुछ गज जरी दी गई जो बनारस के बाजारों में आसानी से मिल जाती है।''

राजा प्रसन्न होकर बोला – ''तुमने मेंरी प्रतिष्ठा की रक्षा की और बनारस की साख को बचाया है, अब मैं तुम्हारे लिए क्या कर सकता हूं?''

बुनकर ने कहा – ''महाराज हमें और हमारे कारीगर भाइयों को सिर्फ वही अधिकार चाहिए जो यहां के ब्राह्मणों और सांडो को है।''

उस दिन के बाद से देश भर के सर्वश्रेष्ठ जरी के कारीगरों ने बनारस को अपना घर बना लिया और बनारस के सबसे महान कवि कबीर ने अपनी रोजी रोटी के लिए जुलाहा बनना मंजूर किया।

बुनकर ने कहा – ''ज्ञानियों को बुद्धि और विवेक फुर्सत के पलों से हासिल होता है और शिल्पकारों में बुद्धि और विवेक अपने शिल्प में माहिर होने पर प्राप्त होता है।''

cqudj us yh egktu ls nkor

एक सूदखोर महाजन था। लोगों को ब्याज पर पैसा उधार देना ही उसका काम था। वह बड़ा रईस और घमंडी था। ऐसे बहुत थोड़े लोग थे जिनके लिए वह कुछ भी करने के लिए तैयार रहता, लेकिन बुनकरों को वह सख्त नापसंद करता था, उन्हें इंसान भी नहीं मानता था। वह कहता कि रोज–रोज करघा चलाने वाले बुनकरों की संगत ही बुरी है।

एक दिन कुछ बुनकर आपस में महाजन के बारे में बात कर रहे थे। एक ने कहा – ''उसने कल महाजन को गाड़ी में जाते देखा'' तभी दूसरा बोला कि ''उसने तो महाजन को नोट गिनते देखा''।

तभी एक नौजवान बुनकर आया और उनकी बात सुनकर हंसने लगा, उसने कहा – ''तुम लोग तो उसको काम करते हुए देखते हो, पर मैं तो जब चाहूं उसके साथ खाना खा सकता हूं।''

इस पर दोनों बुनकर बोले – ''तुम क्या उसके साथ खाना खाओगो, जब तुम उसके घर में दाखिल होगे

तभी वह तुम्हें बाहर निकाल देगा! यहां तक कि तुम उसके दरवाजे पर भी नहीं पहुंच पाओगे।''

फिर दोनो बुनकर बोले – ''तुम झूठ बोल रहे हो, डींग हांक रहे हो।''

नौजवान बुनकर बोला – ''नहीं मैं डींग नहीं हांक रहा हूं।''

दोनों बुनकरों ने कहा – ''ठीक है, अगर तुम उस महाजन के साथ खाना खाकर बताओ तो हम दोनों तुम्हें एक–एक धोती देंगे। और यदि तुम ऐसा नहीं कर पाए तो तुम्हें वह करना पड़ेगा जो हम कहेंगे।''

नौजवान बुनकर ने कहा – ''ठीक है।''

नौजवान बुनकर महाजन की हवेली पर पहुंच गया। महाजन के नौकर ने उसे देखा और घर से बाहर हकालने लगा।

इस पर बुनकर बोला – ''सुनो जरा रुको, तुम्हारे मालिक के लिए मैं एक अच्छी खबर लेकर आया हूं।''

नौकर ने कहा – ''मुझे बताओ क्या खबर है।''

इस पर बुनकार बोला – ''यह खबर मैं ही मालिक को बताऊंगा।''

नौकर घर में गया और उसने महाजन को बताया। महाजन ने सोचा कि बुनकर कर्ज मांगने नहीं आया है बल्कि कोई खबर लेकर आया है, हो सकता है यह बात उसके काम की हो।

महाजन ने कहा – ''बुनकर को भीतर भेज दो।''

नौकर बुनकर को घर में ले आया। महाजन ने बुनकर से पूछा – ''क्या खबर लाए हो।''

महाजन विस्मित हो गया उसने सोचा पता नहीं क्या बात है, बुनकर ने नौकर की ओर देखा और कहा – सरकार मैं अकेले में बताऊंगा। महाजन ने नौकर को जाने को कहा।

बुनकर ने बड़ी ही दबी आवाज में कहा – ''मालिक क्या यह बता सकते हैं कि मेंरी मुट्ठी के बराबर बड़े सोने के टुकड़े की क्या कीमत होगी।''

महाजन ने पूछा – ''तुम यह बात क्यों पूछ रहे हो।''

बुनकर बोला – ''बस मुझे यह पता करना है।''

इस पर साहुकार की आंखे लालच से चमकने लगी, उसके हाथ कांपने लगे।

साहुकार ने सोचा, भला बुनकर यह बात मुझसे क्यों पूछ रह है जरूर उसके हाथ कोई खजाना लग गया है।

अब महाजन बुनकर की चिरौरी करने लगा – ''भले आदमी बताओ कि तुम यह क्यों जानना चाहते हो, चलो यदि तुम बताना न चाहो तो न बताओ।''

इस पर बुनकर बोला – ''अब मैं घर जाऊंगा, मेंरे भोजन करने का समय हो गया है।''

इस पर महाजन ने अपना घमंड छोड़ा वह लालच में अंधा हो गया था।

महाजन ने सोचा मैं चतुराई से इसका सोना इससे हासिल कर लेता हूं। बोला – ''सुनो तुम्हें घर जाने की इतनी जल्दी क्यों है? यदि तुम्हें भूख लगी है तो तुम मेरे साथ खाना खा लो।''

बुनकर भोजन करने बैठ गया और महाजन उसे खुश करने का जतन करने लगा।

महाजन ने बुनकार से कहा – ''जितना चाहे भरपेट खाओ, संकोच मत करो।''

बुनकर भोजन करने लगा, उसने इतना खाया कि अब एक निवाला भी पेट में नहीं जा सकता था।

भोजन के बाद महाजन ने बुनकर से कहा ''अब जल्दी जाओ और तुरंत वह सोने का टुकड़ा लेकर आओ। मुझे अच्छी तरह से मालूम है कि उस सोने के टुकड़े का क्या करना है, और मैं उसके बदले में तुम्हें हजारों रुपए भी दूंगा।''

बुनकर बोला – ''नहीं, मालिक मैं वह सोने का टुकड़ा नहीं ला सकता।''

महाजन बोला – ''क्यों नहीं?''

बुनकर बोला – ''मेरे पास सोने का टुकड़ा नहीं हैं।''

महाजन बोला – ''क्या कहा, फिर तुम मुझसे उसकी कीमत क्यों पूछ रहे थे।''

बुनकर बोला – ''बस ऐसे ही मालूम करना था।''

यह सुनकर महाजन कुपित हो गया, उसका चेहरा नीला पड़ा गया और उसके पैर क्रोध से कांपने लगे। बोला – ''मूर्ख तुरंत बाहर निकल घर से।''

इस पर बुनकर बोला – ''मैं नहीं आप मूर्ख हैं। मैने तो आपके घर खाना खाने के लिए अपने दो दोस्तों के साथ शर्त लगाई थी। अब मुझे दो धोतियां और मिलेंगी। यह करने के लिए दिमाग की जरूरत होती है जो तुम्हारे पास नहीं है।''

यह कहकर बुनकर सीटी बजाता हुआ निकल गया।
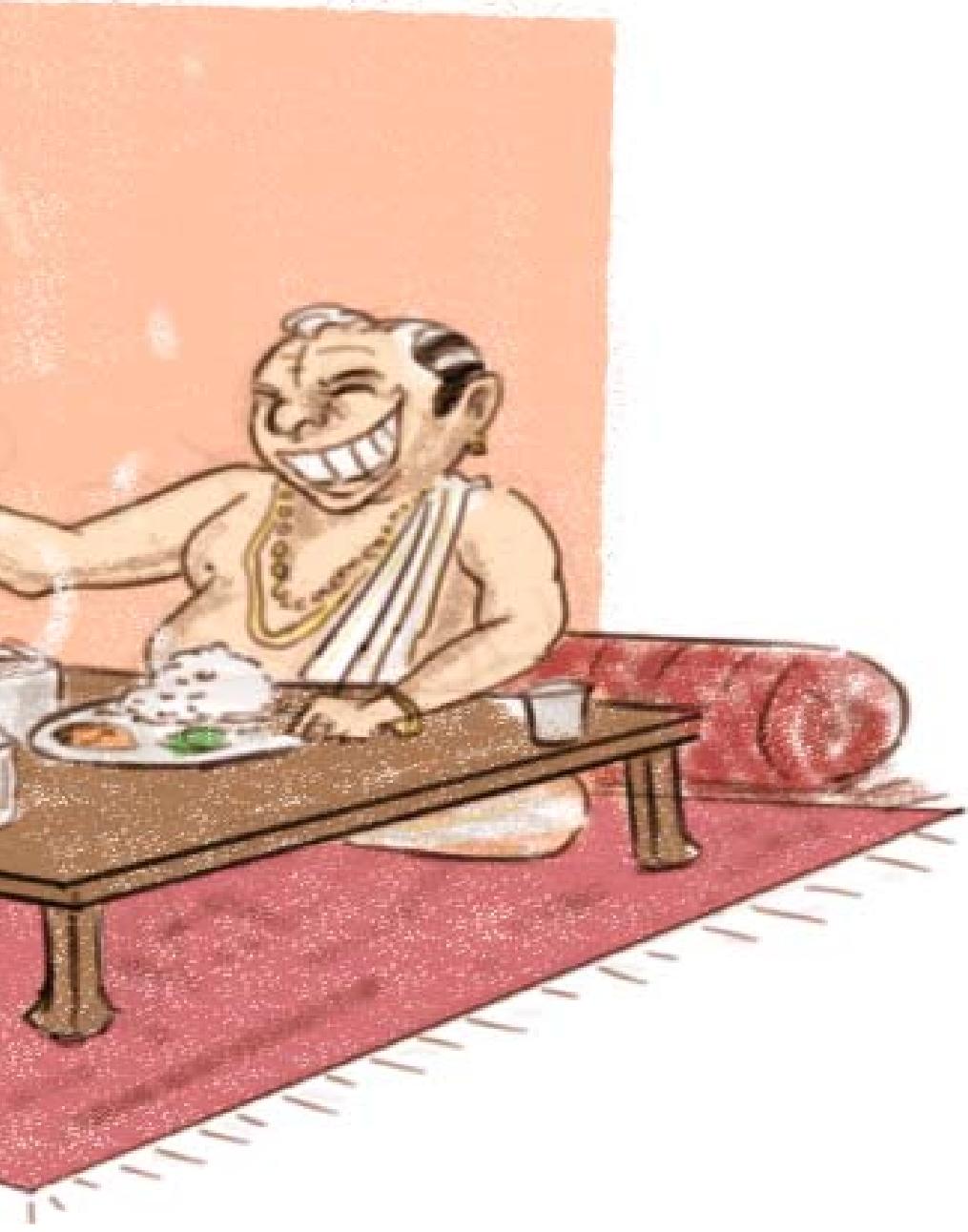
e[k jktk

सालों साल पहले बलाश नाम का एक राज्य हुआ करता था, जहां के बुनकर दुनिया का सबसे अच्छा कपड़ा बनाने के लिए जाने जाते थे। अलग–अलग किस्मों का कपड़ा इफरात में बनाया जाता जिससे हर एक की ओढ़ने–पहनने की जरूरतें आसानी से पूरी होती थी। इसके बाद भी बहुत सा कपड़ा बच जाता जिसे दुनिया के कई देशों में भेजा जाता। बलाश का कपड़ा बड़ा नरम और टिकाऊ होता था। इसे विविध सुंदर रंगों में आसानी से रंगा जा सकता था इसीलिए दुनिया भर के देश बलाश का कपड़ा हासिल करने के लिए आतुर रहते थे। कपड़ों से लदे जहाज पूर्व, पश्चिम और दक्षिण के समंदरों के जरिए विदेश जाते थे। जमीन के रास्ते काफिलों में कपड़ा दूरदराज़ देशों तक पहुंचता था। दूसरे देश इस कपड़े के एवज में बलाश राज्य को सोना और चांदी देते थे, जिसके चलते बलाश दुनिया का सबसे अमीर देश हो गया था।

बलाश के सभी लोग यही कपड़ा पहनते थे। राजा और रानी इसी कपड़े पर सोने और चांदी की जरी का काम

कर पहनते थे, वहीं आम नागरिक बिना जरी के काम वाले सादे कपड़े पहनते। बलाश की आम जनता, दूधवाले, गड़रिये, व्यापारी, दीवान और गांव और कस्बे के लोग उनके लिए खास तौर पर बनाए गए विविध तरह के कपड़े पहना करते थे। एक जगह टिककर बैठने वाले, पढ़ने वाले और इस कहानी को लिखने का काम करने वाले जैसे लोग दर्जी से कपड़ों को सिलवा कर ढीले–ढाले वस्त्र पहनते थे। घुड़सवार और पेड़ लगाने का काम करने वाले मोटा और मजबूत किस्म का कपड़ा पहनते थे, उनके लिए ही खास तौर पर अंगरखा सिला जाता था। राजकुमार और राजकुमारी बढ़िया वाला मलमल पहनते थे। बगीचों में काम करने वाले, जहाज चलाने वालों को अपना शरीर और सर कड़ी धूप से बचाना पड़ता था। उनके लिए बनाए गए कपड़ों के लिए धागे को तेल और पानी में डुबोया जाता ताकि गर्मी से बचाकर रखने वाली पगड़ियां और साफे–गमछे बनाए जा सकें। बलाश देश के हर कस्बे और गांव में बुनकरी की अलग–अलग शैली होती थी। किसी के भी कपड़े देखकर यह अंदाजा लगाया जा सकता था कि फलां आदमी कहां का रहने वाला है।

राज्य में बड़े पैमाने पर कपास की फसल होती थी, अलग–अलग कपास की किस्म से अलग–अलग धागे बनाए जाते थे। इन घरों से मोटा, पतला, नरम और मजबूत कपड़ा बुना जाता था। धागा कातने वाले और
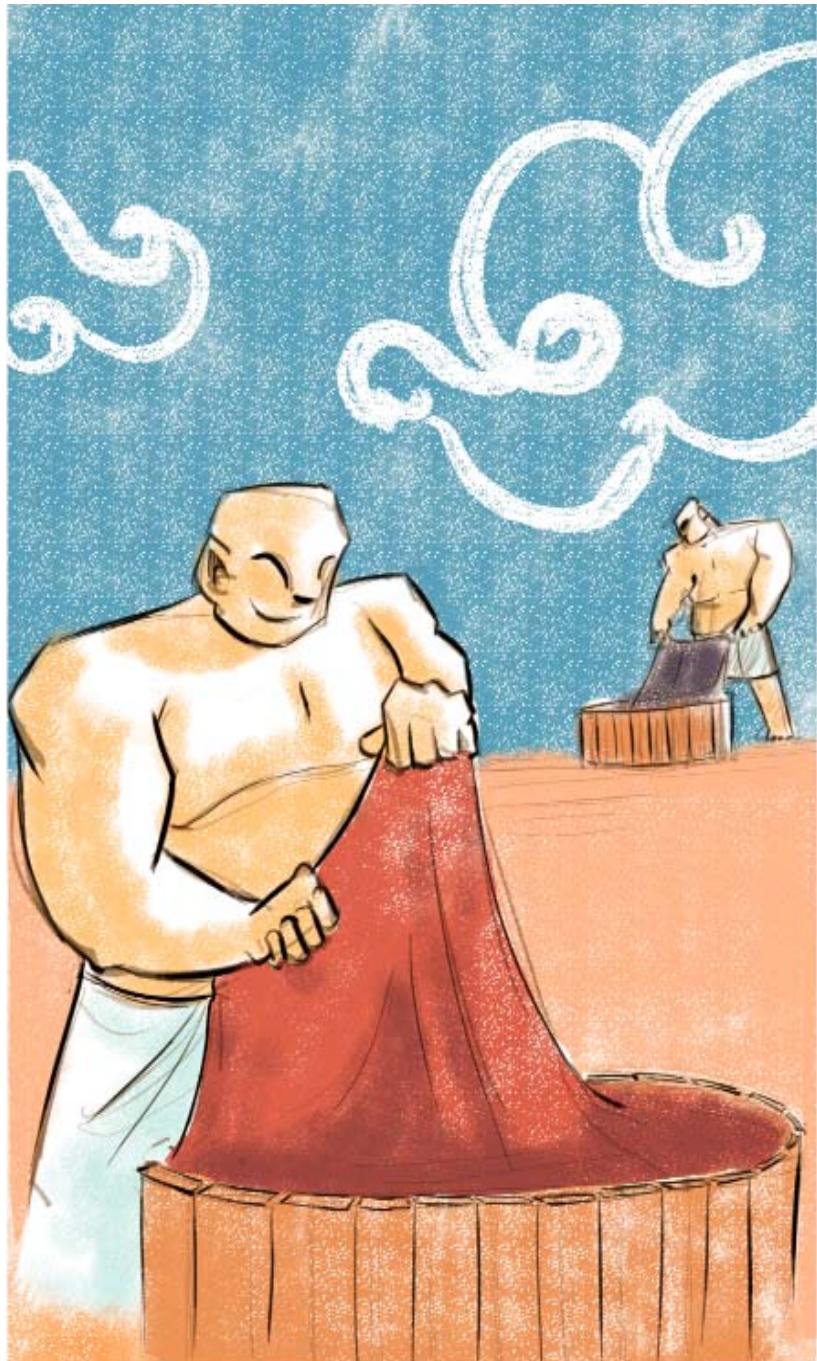
बुनकर, कपास की खेती करने वाले किसानों से मिला करते थे और अपनी जरूरत की किस्म के कपास के बारे में उन्हें बताते थे, किसान उनकी जरूरत के मुताबिक कपास उगाता था।

बालाश में हजारों किसान कपास उगाते और धागा बनाते थे। इन किसानों और बुनकरों के अलावा धागों को छोटी–छोटी बॉबिन में लपेटने का काम करने वाले लोग होते थे, ये बॉबिन करघे की शटल में लगाई जाती थी। धागे को लंबाई के मुताबिक व्यवस्थित करने वाले भी होते थे। मांड देकर धागे को पक्का और मजबूत बनाया जाता था ताकि उसे बुनाई लायक मजबूती मिल सके। कई लोग करघा बनाने का काम करते थे। बॉबिन बनाने, शटल बनाने वाले, करघे पर धागा चढ़ाने वाले, मांड देने का बरुश बनाने का काम भी बहुत से लोग किया करते थे। रंगरेज भी होते थे जो धागे और कपड़े को रंगने का काम करते थे। छपाई करने वाले कपड़े पर कलात्मक और सुंदर छपाई करते थे। इन कपड़ों को बाजार में बेचा जाता था और बाजार से लोग इन कपड़ों को बेचने के लिए ले जाते थे। इस तरह बलाश के सभी लोग हंसी–खुशी जीवन बिता रहे थे और वे अपनी समृद्धि और खुशहाली के लिए कपड़े के काम को धन्यवाद देते थे।

खुशी के दिन पंख लगाकर उड़ रहे थे कि पंडो और मंडो नाम के दो ठग बलाश देश पहुंचे। उन्होंने राजा

के दर्शन करने की इच्छा जाहिर की। राजा के साथ मुलाकात में उन्होंने कहा – ''महाराज पूरी दुनिया में आपका ही देश ऐसा है जहां पर धागे की कताई और कपड़े की बुनाई हाथ से की जाती है। क्या आपको पता नहीं कि दुनिया बदल रही है और अब मशीन से बने कपड़ों का चलन है। हम ऐसी मशीन बनाते हैं जिससे धागे की कताई से लेकर कपड़े की बुनाई का सारा काम हो जाएगा। हम आपको ऐसी मशीनें बेच सकते हैं। हमारी मशीन से बना कपड़ा बहुत जल्दी फट जाता है ऐसे में इस कपड़े की मांग बढ़ेगी और आप मशीनों से और कपड़ा बनाकर बेचेंगे और बहुत पैसा कमा सकेंगे। आज के समय में कपड़ा बनाने का यही तरीका है। जो लोग इस मशीन के मालिक होंगे वे ज्यादा से ज्यादा पैसा कमाएंगे, अभी तो कपड़ा बुनकर ही ज्यादा पैसा कमा रहे हैं। अभी आपके देश में पुराने तरीके से लकड़ी के करघों पर कपड़ा बनाया जा रहा है, ये लोग अपने अपने घरों में थोड़ा–थोड़ा कपड़ा कई किस्मों में बना रहे हैं जिसकी जरूरत नहीं है। हमारी मशीनों से फैक्टरियों में इफरात में एक जैसा कपड़ा बनाया जा सकेगा। यदि आप हमारी मशीनें खरीद कर उन्हें फैक्टरियों में लगवा देते हैं तो आप बहुत अमीर बन जाएंगे।''

पंडो और मंडो की बात सुनकर बलाश का राजा बहुत खुश हुआ। वह बड़ा मूर्ख था लेकिन उसकी रानी बड़ी

चतुर थी। राजा ने रानी को यह बात बताई तो रानी ने कहा 'उन मूर्खों की बातों में मत आना। आज सारी दुनिया के लोग हमारे देश के हाथों से बुने हुए कपड़े खरीदते हैं क्योंकि यह कपड़ा बड़ा मुलायम है और बहुत समय तक चलता है। यदि हमने इस कपड़े को मशीन से बनाया तो क्या वह कपड़ा भी इतना ही अच्छा होगा? क्या हाथ से बने हुए इस कपड़े को दूसरे देश के लोग खरीदेंगे और हमारे देश के कपड़ा बनाने वालों का क्या होगा। लेकिन राजा ने रानी की बात अनसुनी कर दी। राजा ने मंडो और पंडो को सोने की अशर्फियों से भरे बोरे देकर मशीनें खरीद ली। राजा ने बड़ी–बड़ी फैक्टरियां बनवा दी जिसमें राज्य की पूरी बिजली का इस्तेमाल सिर्फ कपड़े बनाने में ही किया जाता। ये मशीनें दिन–रात कपड़े बनाने लगीं। कपडा–मीलों में रोज हजारों मीटर कपड़ा बनने लगा। राजा ने नया कानून बना दिया जिसमें लोगों से कहा गया कि उन्हें फैक्टरियों से बना हुआ कपड़ा ही खरीदना होगा। राज्य में किसी को भी हाथ से कपड़ा बुनने की इजाजत नहीं होगी। राजा के सिपाहियों ने सारे बुनकरों के हथकरघे तोड़ डाले। करघे के उपकरणों, बॉबिन, चरखा, शटल आदि के टुकड़े–टुकड़े करवा दिए। राजा ने हाथ से बुने हुए कपड़ों का ढेर लगवाया और उसमें आग लगवा दी।

राजा के इस नए कानून से बलाश के स्वस्थ, समृद्ध और सुखी लोग गरीब होने लगे। फांकाकशी की नौबत

आने लगी। कुछ लोगों ने नया काम करना शुरू कर दिया लेकिन अधिकतर लोगों को नया काम भी नहीं मिला। लोगों को उनके कांसे के बर्तन और लकड़ी के बने पलंग तक बेचने पड़े। हालात यह हो गए कि कच्चे घरों के छप्पर सुधरवाने तक का पैसा नहीं रहा। जब हवा तेज चलती और बारिश होती तो उनके घर सीलन से ठंडे और गीले हो जाते।

उस दौरान बलाश में एक यात्री पहुंचा जिसने अपने दोस्त को लिखे पत्र में उस दौर का वर्णन किया है।

'जब मैं पचास साल पहले जवानी में इस देश में आया था तो इस देश के सारे लोग हाथ से कपड़ा बनाने में मसरूफ रहते थे, यह देश इसी कपड़े के लिए मशहूर था। इस देश के गांव और कस्बे साफ सुथरे थे। सड़कों पर कतार से पेड़ थे। हर बुनकर और कताई करने वाले के घर में एक छोटा बागीचा होता था। ये लोग राहगीरों को ठंडा पानी और छांछ पिलाया करते थे। इनके बच्चे स्वस्थ थे और प्रसन्नचित्त होकर शिक्षा अर्जन के लिए जाया करते थे। अब मैं वृद्धावस्था में इस देश में फिर लौटा हूं पर अब इस देश के लोग पहले की तरह प्रसन्न और स्वस्थ नहीं लगते।' असल में जब से राजा ने मशीनों से कताई और बुनाई करवाने का काम शुरू करवाया है, हाथ से कताई और बुनाई करने वाले लोग बेकार हो गए। यात्री लिखता है – ''वे कृशकाय और गरीब हो गए। अब उनके पास कुछ

काम नहीं है। उनके बच्चे भी उदास रहने लगे हैं। एक समय था जब इन लोगों के हाथ से बुने हुए कपड़े के लिए यह देश दुनिया भर में मशहूर था। जब मैं पहले इस देश में आया था तो मुझे एक भिखारी तक नहीं दिखता था। आज जगह–जगह भिखारी भीख मांग रहे हैं। मुझे लगता है कि हंसी खुशी और समृद्धि के वे दिन अब लद गए हैं।''

बलाश में लोगों की इस बदहाली से राजा को कोई फरक नहीं पड़ा। उसने दोनों ठगों को बलाश में ही बसा दिया। उन्हें रहने के लिए एक बड़ा घर दे दिया। दोनों ठग दिन भर यही सोचते कि किस नए तरीके से राजा से ज्यादा से ज्यादा सोना और चांदी हासिल किया जाए। अब ठगों को एक नई चाल सूझी लेकिन उन्होंने तय किया कि वे यह बात रानी को नहीं बताएंगे क्योंकि वह हमारी चाल तुरंत भांप जाएगी। एक दिन मंडो और पंडो ने राजा के पास संदेशवाहक भेजा कि वे राजा से एकांत में मिलना चाहते हैं। उन्होंने राजा को यह कहलवा भेजा कि वे इस मुलाकात को गोपनीय रखें, यहां तक की रानी को भी इस बात का पता नहीं चलना चाहिए।

मंडो और पंडो ने राजा से एकांत में मुलाकात की और उसे बताया – ''महाराज हम अब आपसे विदा लेना चाहते हैं और जाते–जाते हम आपको जादुई लबादा भेंट करना चाहते हैं। यह खास किस्म के कपड़े से बना

होगा और इसकी खासियत यह होगी कि यह सिर्फ उन्हीं लोगों को दिखेगा जो बुद्धिमान हैं। मूर्ख और बिना दिमाग वाले लोगों को यह लबादा दिखाई नहीं देगा।'' इस लबादे को पहनकर आप अपने मंत्रियों को भी परख सकेंगे कि कौन मंत्री बुद्धिमान है और कौन मूर्ख, क्योंकि इस जादुई लबादे को वे ही देख सकेंगे जो बुद्धिमान होंगे। मंडो और पंडो ने महाराज से कहा इस जादुई कपड़े को बनाने के लिए हमें जादुई धागा खरीदना होगा और इसके लिए हमें एक गाड़ी भरकर स्वर्ण मुद्राएं चाहिए।''

मूर्ख राजा ठगों की यह बात सुनकर बड़ा उत्साहित हुआ और उसने प्रधानमंत्री को एक गाड़ी स्वर्ण मुद्राएं मंडो और पंडो के घर पहुंचाने का आदेश दिया। दोनों ठगों ने अपने घर का सबसे बड़ा कमरा खाली किया और उसमें बड़ी जटिल किस्म की मशीनें और यंत्र लगा दिए। ये मशीनें दिन–रात ठोका–पीटी करती घरघराती और तरह–तरह की आवाजें किया करतीं। हर दिन वे राजा को बताते कि जादुई कपड़ा बनाने का काम बहुत मशक्कत भरा और थका देने वाला है और इसके लिए और धन मांगा करते।

एक महीने बाद मंडो और पंडो ने राजा को फिर बुलवाया और कहा कि महाराज जादुई लबादा तैयार है, आप यहां आएं ताकि हम आपको यह जादुई लबादा पहना सकें। साथ ही आप अपने मंत्रियों को तैयार रहने

के लिए कहें। इस बीच दोनों ठगों ने राजा से हासिल किया गया सारा धन, सोने की मुद्राएं अपने छोटे से विमान में लदवा लिया।

जब राजा आया तो मंडो और पंडो ने अपने खाली हाथ हवा में उठाते हुए राजा से कहा देखो महाराज कितना सुंदर है यह जादुई लबादा। महाराज कृपया आप अपने कपड़े उतारिए ताकि यह जादुई लबादा हम आपको पहना सकें। फिर दोनों, राजा को कपड़े उतारने में मदद करने लगे और अपने हाथ में रखा लबादा महाराज को पहनाने लगे।

राजा ने आईने में देखा तो धक्क रह गया, उसे कोई लबादा या जादुई कपड़ा दिखाई नहीं दिया, राजा ने सोचा – क्या मैं बुद्धिमान नहीं हूं? इस पर ठगों ने कहा कि महाराज लबादे को अपना असर दिखाने में कुछ वक्त लगेगा आप थोड़ा इंतजार कीजिए। ठगों ने राजा को उनके घर में छोड़ा और तेजी से अपने छोटे विमान के पास पहुंचे और विमान लेकर उड़ गए।

इधर राजा को बैठे–बैठे रात हो गई। कुछ देर बाद राजा ने कमरे में बिजली जलाई उसने आईने में फिर देखा लेकिन उसके शरीर पर कोई लबादा नहीं थी। राजा ने मंडो और पंडो को पुकारा लेकिन कोई जवाब नहीं आया। राजा विचलित हो गया और उसने रानी को बुलवाया और सारी कहानी बताई। रानी समझ चुकी थी कि राजा को मूर्ख बनाया जा चुका है। रानी ने

सिपाहियों को ठगों को पकड़कर लाने का आदेश दिया, लेकिन जब तक सिपाही उन्हें पकड़ पाते दोनों ठग बलाश छोड़कर जा चुके थे।

इसके बाद रानी ने राजा से कहा – ''तुम इस देश पर शासन करने के योग्य नहीं हो। देश का खजाना खाली हो चुका है और लोग भूखे मर रहे हैं, अब मुझे शासन संभालना पड़ेगा।'' रानी ने तुरंत सारे मंत्रियों की बैठक बुलाई और अपनी योजना समझाई। रानी और मंत्रियों ने मिलकर तय किया कि अब कोई कपड़ा मशीनों से तैयार नहीं किया जाएगा, सूत हाथ से ही काता जाएगा और सिर्फ हथकरघे से ही कपड़े बुने जाएंगे। यह संदेश तुरंत बुनकरों तक पहुंचाया गया। सभी से कहा गया कि वे अपने हथकरघे जितनी जल्दी हो सके शुरू कर दें। थोड़े ही समय में नए हथकरघे और तकले बन गए और किसानों ने भी बुनकरों की जरूरत के मुताबिक कपास उगाना शुरू कर दी।

थोड़े ही साल में बलाश फिर से धनी और समृद्ध देश बन गया।
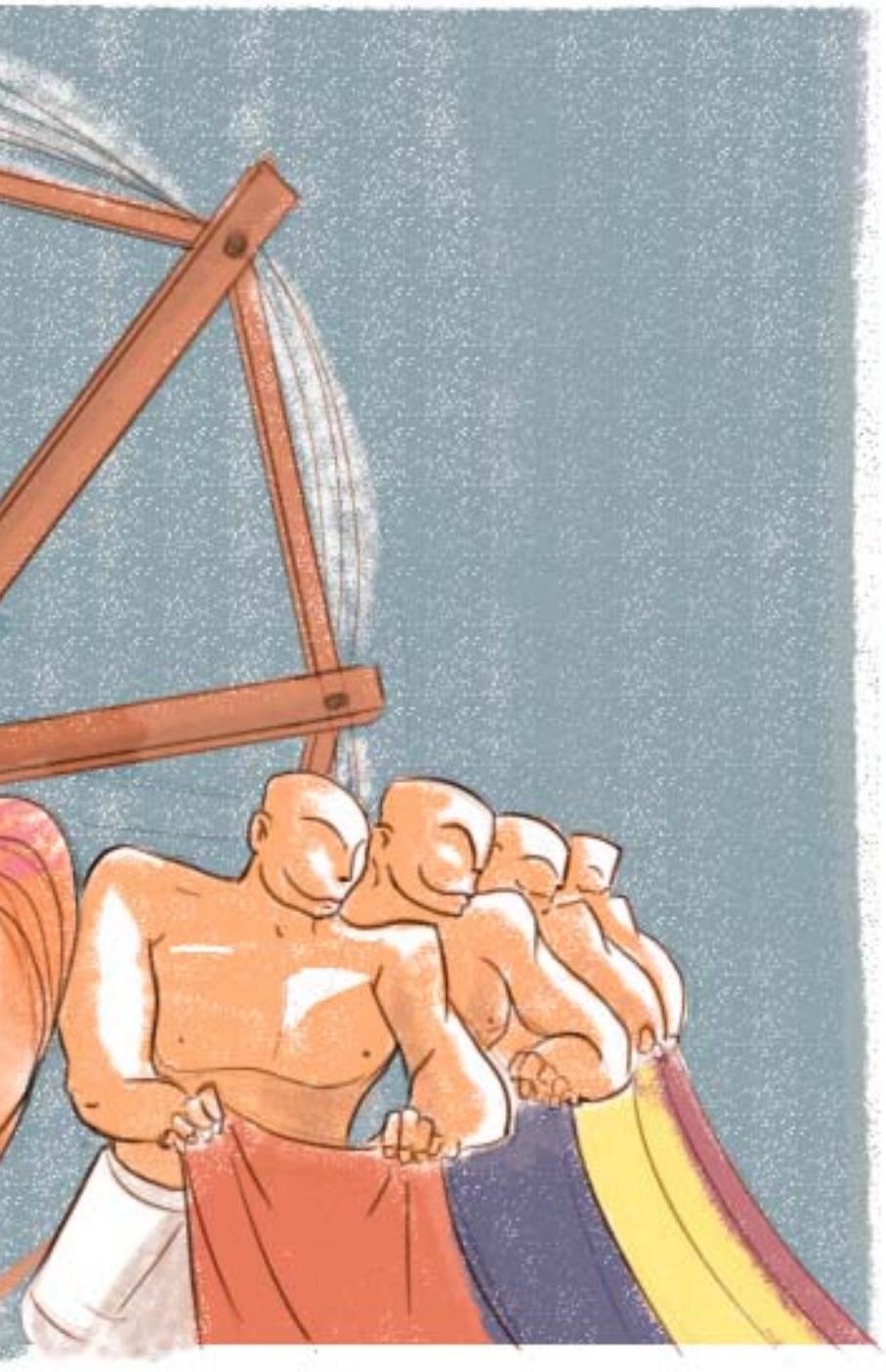
ये कहानियां बुनकरों के करघे, उनके लोक जीवन और उनकी रचनात्मक कल्पनाओं के इर्द–गिर्द बुनी हुई है जो हमें बुनकरों की जादुई दुनिया और फंतासी में ले जाती हैं।

ये दंतकथाएं बुनकरों के सामंजस्यपूर्ण समाज के मूल्यों को रेखांकित करती है।

BANYAN TREE ₹ 80